सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, नवम्बर-दिसम्बर, 2010

परमेश्वर ने शासकों को सिंहासनों से गिरा दिया।

क्रिसमस का आत्मा

"उसने राजाओं को सिंहासन से गिरा दिया और दीनों को महान कर दिया।" लूका 1:52

इधर एक नवयुवती मरियम नबूवत कर रही है। इलीशिबा, जो मरियम से उम्र में बहुत बड़ी थी, मरियम को मेरे प्रभु की माता कहकर पुकार रही थी। मरियम को अभी से ही सम्मान मिलने लगा था। इस तरह परमेश्वर दीनों को सम्मानित करते है। मरियम को देखकर इलीशिबा अत्यंत प्रसन्न हुई। वह पवित्रात्मा की भाषा में बात कर रही थी। वह पवित्रात्मा के अभिषेक से कई बातों को समझ पाई। ये दोनों परिवार संबन्धी है और आध्यात्मिकता में बहुत ऊँचे स्तर पर है।

अगर रेत को एक ढेर में इक्ट्ठा किया जाये, तो वह ढेर नीचे बहत विशाल और ऊपर जाते

पृष्ठ 3 पर ... *परमेश्वर ने शासकों..*

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

ETC TV ***चैनल पर***

हर ***शनिवार सुबह 7:00 से 7:30***

"क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता जन्मा है और यही मसीह प्रभु है।" लूका 2:11

क्रिसमस के माहौल में तलाशने पर हम पाते है, एक बहुत अलग, क्रिसमस के पात्रों में सादगी, सतर्कता और पवित्रता को देखते है। आज कल हम लोग बहुत चालाक बन गये हैं। क्रिसमस की कहानी पर हम ध्यान दें तो, हम सिर्फ बहुत साधारण लोगों को देखते है जो पढ़े लिखो और बड़ी-बड़ी नौकरी करने वाले नहीं है। आजकल ऐसे लोग हैं जो इतना व्यस्त रहते हैं कि वे उद्धारकर्ता के पैरों पर बैठकर सीखने के लिए समय नहीं निकाल पाते। आज कई लोगों में आत्मिक इच्छाओं को क्षीण होता देख रहा हूँ। यह बड़े दुख की बात है कि कुछ लोग किसी स्थान पर जाकर, वहाँ परमेश्वर के कार्यों में जुड कर हाथ नहीं बटाते। क्या आप कह सकते हो कि ऐसे लोग क्रिसमस की कहानी में जुडने के योग्य हो सकते हैं? क्या आप कह सकते हो कि नये नियम के जो मूल्य हैं उन उन पर जी रहे हैं? नहीं, उनका धर्म सिर्फ एक मुखौटा है। नये नियम के उन ज्ञानियों की तरह खोजना, वे नहीं सीख पाये।

हम उन पूर्व दिशा से आये ज्योतिषों में खोजी मन और सीधा-सादा खोजने का आत्मा देखते है। अगर हमारा सारा धर्म, हमारे अन्दर ऐसी खोजने की आत्मा, जो यह कहे, "मैं किसी भी कीमत पर परमेश्वर की इच्छा को ही पूरा करूँगा।" उत्पन्न न करे तो वह किसी लाभ का नहीं है। क्रिसमस की कहानी उस खोजी मन को हम तक लाती है।

क्रिसमस की कहानी में हम क्या देखते हैं? एक नबूवत भरी आत्मा। सदियों पहले जो बाइबल में लिखा गया है। ये लोग उसके सच को पूरा होने की इन्तजार में और उसको परिपूर्ण कर रहें है। वे भय व्यक्त नहीं कर रहें है। बल्कि किस तरह हर एक पात्र क्रिसमस की कहानी में, परमेश्वर की योजना में विलीन हुआ है! क्या कारण है कि हम परमेश्वर की योजना को सफल नहीं कर पा रहे है?

हम ने क्रिसमस को असहजता और अवज्ञता से भर दिया है। क्रिसमस का असली संदेश

पृष्ठ 1 से ... क्रिसमस की आत्मा

हम पाना नही चाहते है। यह कितनी दुखद बात है! अगर हम ने क्रिसमस का संदेश स्वीकार किया है तो हम कहते, "जहाँ भी मुझे परमेश्वर भेजे, वहाँ इस सुसमाचार को मैं लेकर जाऊँगा।" हम यह नही कहेंगे, "यह बड़ा दिक्कत वाला काम है।" कई बार इस काम में दिक्कतें आ सकती हैं। जब मेरी छाती में दर्द होता, तो भी मैं उसे भूलकर परमेश्वर के वचन का प्रचार करने में आगे बढ़ता। मरियम और यूसुफ को, अपनी जिन्दगी में, परमेश्वर की योजनाओं को सफल बनाने के लिए कई मुश्किलों से गुजरना पड़ा। जो कठिनाइयों की रास्ते से डर कर दूर भाग जाते है, वे परमेश्वर के कार्य का निर्माण कभी नहीं कर पायेंगे। वे उसका सिर्फ नाश और सर्वनाश ही करेंगे।

मरियम को यूसुफ के साथ उसके नगर, जो दाऊद का नगर बैतलहम है, जाना पड़ा। वह मरियम के लिए एक लम्बा और कठोर सफर था। और उसको शर्मिन्दगी का भी सामना करना पड़ा। कई लोगों के नज़रों में वे एक बहिष्कृत रही होगी। मगर मरियम ने कभी रुखाई व्यक्त नही की। उसने कहा "देख, मैं तो प्रभु की दासी हूँ। तेरे वचन के अनुसार ही मेरे साथ हो।" (लूका 1:38)

हम आज बड़े अत्याधुनिक है। असली क्रिसमस में और आज जिस तरह हम क्रिसमस मनाते है, और किस तरह आज हम जी रहें है उस में मुझे कोई समानता नजर नहीं आती। अब, क्रिसमस में भेंट पाने का लालच या किसी भी तरह की सांसारिकता को हम नहीं देखते। "देख, मैं तो प्रभु की दासी हूँ।" क्या आपको भी ऐसा क्रिसमस चाहिए जो मरियम का था? क्या आपका मन कहता है, "देख, मैं तो प्रभु का दास हूँ। मैं आपको महिमा पाते देखना चाहता हूँ।" सादगी, सतर्कता, पवित्रता - क्रिसमस के इन मूल्यों में आज हम विश्वास नहीं रखते। आजकल हम बड़े चालाक लोग बन गये है। हम साफ-साफ नहीं कह पाते, "देख, मैं तो प्रभु की दासी हूँ।" इस तरह आत्मा द्वारा प्रेरित निर्णय लेने में, हमें दो साल या बीस साल भी लगा सकते हैं। अब, हम देखते हैं कि ऐसे निर्णय तो तुरन्त उसी वक्त लेना और करना चाहिए। समय नहीं गवांना चाहिए। यह परमेश्वर के वचन का ठीक उसी समय आज्ञा पालन करना है। यही सच्चा क्रिसमस कहलाता है।

क्या आपका ऐसा मन है जो कहे, "हाँ, प्रभु, मैं यहाँ हूँ। चाहे मुझे जो भी कीमत चुकानी पड़े, मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।" अगर हम अपनी जिन्दगी और अपने परिवारों में, परमेश्वर के वचन के प्रति ऐसी आज्ञा पालन देख पायें तो वह कितना अद्भुत होगा। कितने आश्चर्य कार्य सामने आयेंगे! क्रिसमस की कहानी से जुड़े किसी भी व्यक्ति की जिन्दगी में, अपनी इच्छाओं के पीछे चलने का कोई सवाल ही ना था।

मेरे मन फिराने के बाद, इन 63 सालों में, मेरे जिन्दगी का सिर्फ एक ही मक़सद रहा है - परमेश्वर की इच्छा जानूं और परमेश्वर को महिमा पहुँचाऊँ। अगर आप मुझे, मेरी जवानी के दिनों को फिर से लौटाओ, तो मैं और प्रबल उद्देश्य से परमेश्वर को खोजूँगा। वास्तव में, मैं एक बेवकूफ, सीखने में मन्द और आज्ञा पालन में धीमा था। मगर आप मुझे अपनी जवानी लौटा दे, तो मैं अपने उद्धरकर्ता का, पहले से भी अधिक और अधिक आधीन हो जाऊँ। हमारा सिर्फ एक ही उद्देश्य था - परमेश्वर की इच्छा पूरी करना। बड़ा नाम कमाने की, पैसों की हमने कभी परवाह नहीं की। हम सिर्फ परमेश्वर की इच्छा करने और

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

उनको महिमा पहुँचाने की खोजी रहें है। अब मैं लोगों को धीरे-धीरे रास्ते से भटकते देखता हूँ क्योंकि उनके अपने-अपने मक़सद है। जब तक मैं जीवित हूँ मैं लाल झंडा दिखाते यह कहता हूँ, "परमेश्वर ने जो हमें सिखाया, आप उस से अलग होते जा रहे हो और वह बहुत खतरनाक है।" परमेश्वर ने हमें यीशु मसीह को दिया, जो हमें रास्ता दिखाने के लिए हम से बात करने वाला उद्धारक है। हम अपने मन की सुन लें और उनको महिमा पहुँचाने की एक मात्र लक्ष्य से उस उद्धारकर्ता के पीछे चले।

उस स्वर्गदूत ने मरियम से कहा, "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परम प्रधान का सामर्थ्य तुझ पर आच्छादित होगा। इसी कारण वह पवित्र पुत्र जो उत्पन्न होगा, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।" मेरे प्रिय मित्रों, यह मेरे और आपके हाथों में है कि हम पर उतरता पवित्रात्मा का ग्रहण करें और दावा करें ताकि वह अपना विचार हम पर प्रकट करें और हम में उनका पुत्र नज़र आये! तब सांसारिकता, व्यर्थता और बेवकूफी की बातें नहीं, बल्कि परमेश्वर के महान उद्देश्य आपके द्वारा सफल बनेंगे। जो आप से उत्पन्न है, वह जीवित मसीह को दर्शाता रहेगा। क्या आपके जीवन में वैसा हो रहा है? अब से वैसा होने दो।

-- जोशुआ दानियेल

पृष्ठ 1 से ... *परमेश्वर ने शासकों..*

बहुत संकीर्ण बनता है। यहूदी, परमेश्वर की प्रतिज्ञा पाई हुई जाति हैं। मगर इन दोनों परिवारों ने अपने आध्यात्मिक जीवन को इतना मज़बूत बनाया कि वे इन प्रतिज्ञाओं को विनियोजित करके विश्वास और परमेश्वर की संगति में अपने राष्ट्र के सब लोगों से ऊपर वे खड़े थे। ऐसा लगता है मानो ये दोनों परिवार स्वर्ग को छू रहें हो। जब माता-पिता आध्यामिक जीवन में उत्सुक है तो उनके बच्चे कुई दफा उनसे भी अधिक आध्यात्मिक उन्नति पाते है। एक असली सहभागिता के बिना सही आध्यात्मिक लोगों को पाना मुश्किल है। जॉन वेस्ली, सच्चे मसीही लोगों की सहभागिता के बीच में था। सहभागिता में एक व्यक्ति के विश्वास से दूसरे को सहायता मिलती है।

मरियम ने कहा, "अब से लेकर युग-युगान्तर की पीढ़ियाँ मुझे धन्य कहेंगी।" (लूका 1:40) वह समझ गई की वह एक लोक प्रिय व्यक्ति बन गयी है। यीशु ने दुष्ट आत्माओं के ऊपर प्रबल होने का सामर्थ उन आदमियों को दिया। जब यीशु ने अपने चेलों को सेवा के लिए बाहर भेजा, तब पहले उन्होंने उनको अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकाले। यीशु इस दुनिया में सामर्थ लाये है। "जिनमें तुम पहिले इस संसार की रीति और आकाश में शासन करने वाले अधिकारी अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में क्रियाशील है।" (इफिसियों 2:2) यही अशुद्ध आत्मायें मनुष्यों को पाप करने के लिए मजबूर करती हैं।

"अतः जिस प्रकार बच्चे मांस और लहू में सहभागी हैं, तो वह आप भी उसी प्रकार उनमें सहभागी हो गया, कि मृत्यु के द्वारा उसको जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली है। अर्थात् शैतान को, शक्तिहीन कर दे, और उन्हें छुड़ा ले जो मृत्यु के भय से जीवन भर दासत्व में पड़े थे।" (इब्रानियों 2:14,15) मृत्यु के भय से शैतान आपको डराना चाहता है। मगर यीशु ने मृत्यु का डंक निकाल दिया है। यीशु के पास मृत्यु पर प्रबल होने की शक्ति है। 'अधिकार' एक खतरनाक चीज है। एक चरित्र हीन के पास अधिकार होना खतरनाक साबित हो सकता है। नया स्वभाव जो यीशु आपके लिए लाये है उस से बढ़कर उस अधिकार पाने के विषय पर आप ज्यादा ध्यान मत देना। जब परमेश्वर के वचन का आप उल्लंघन करते हो तब शैतान आपके ऊपर अधिकार पाता है। जब आप परमेश्वर का भय मानकर उनके

सत्य की परख !

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

यूहन्ना 3:16

वचन के अनुसार चलते हो, तब शैतान को आपके ऊपर कोई हक नहीं होगा। जब आप परमेश्वर के वचन का ठीक पालन करते हो तभी परमेश्वर से आपको सही दिशा का निर्देशन मिलता है।

परमेश्वर कहते है कि वे हमें पवित्र आत्मा देंगे और वह हमें सब सत्य का मार्ग बताएगा। मरियम में हम दैविक स्वभाव को देख सकते है। यौवन स्त्री होते हुए मरियम ने उस दिव्य स्वभाव को पाया। यूसुफ, मरियम, जकरयाह और इलीशिबा, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला और यीशु मसीह, इन सब के बारे में सोचना - यह हमारे लिए कितनी अनुग्रहकारी बात है। जब हम इन लोगों के बारे में सोचते है, हम किसी और ही मण्डल में उठाये जाते है। यीशु हमारे लिए एक नया स्वभाव लाये है। आपके विचार स्वर्ग तक पहुँचकर, परमेश्वर के हृदय को प्रसन्न करेगें। मसीह ने अपने चेलों को एक नया स्वभाव देकर उन्हें मनुष्यों के मछुए बनाया। परमेश्वर का स्वभाव समझने में आप जितना गहरा जाओगे, आपकी प्रार्थना उतनी शक्तिशाली बनती जायेगी।

परमेश्वर अपने आपको हम पर प्रकट करना चाहते है। हम अपने घमंड और बेतुकेपन से पीछा छुड़ाकर, परमेश्वर को अधिक और अधिक गहरी रूप से जान ले। स्वर्ग और धरती का परमेश्वर से हमारा परिचय कराने मसीह इस दुनिया में आये है।

प्रेम - घृणा से बढ़कर शक्तिशाली है।

पहले विश्व युद्ध के दौरान घटित सब से उत्तेजक तथा चिरस्मरणीय घटना, पहला क्रिसमस के दिन घटा था। कई महीनों के निर्लभ हत्याकाण्ड के बाद, जर्मनी, फ्रान्स और ब्रिटेन की विशाल सेनायें लड़लड़कर मानो थम सा गये। और अब नॉर्थ सी से लेकर ऐल्पस पर्वतों तक, धरती में गहरे घाव जैसे ख़ंदकों में सिपाही एक दूसरे को देख रहे थे।

फ्लॉन्डर्स में जर्मनी की सेना, अंग्रेजी सेनाओं का सामना कर रही थी। उनके बारे में क्या कहें? सेनाओं के भयानक संघर्ष से चारों तरफ विध्वंस मचा था और पूरा देश वीरान और उजाड़ दिख रहा था। तबाह और झुलसते कई गाँव और कई ध्वंस किये गये गिरिजाघर। सब जगह लाशें ही लाशें - जो महीने पहले मरा, एक हफ़्ते पहले या कल मरा था, या पिछली रात ही मारा था। मैदान में भी बिखरीं लाशें और बिच्छुओं की तरह कांटीलें तार से बने रक्षक घेरों में लटकते दोनों तरफ के सिपाहियों के शव!

तब, रातों-रात, जिस रात हमारे उद्धारकर्ता का जन्म हुआ, क्रिसमस की पूर्व संध्या आयी। अपने-अपने गड्ढों में खड़े सिपाही, शत्रुओं के अपेक्षित हमले अपेक्षित को लेकर सतर्क खड़े थे। मगर उस रात कोई मुठभेड़ नहीं हुई। इस तरह वह रात बीत गई। सूरज निकल आया। शान्ति के राजकुमार का दिन, वह क्रिसमस की सुबह थी।

उस सुबह की ठंडी में अंग्रेजी सिपाही अपने हाथों में बन्दूकें लिए सतर्क खड़े इन्तजार कर रहें थे। हर सुबह वे जर्मनी के सेनाओं की ओर से तोपों की गोलाबारी में घृणा का संगीत सुनते थे। मगर आज सुबह वह द्वेष का संगीत सुनाई नहीं दिया! उनकी बन्दूकें आज ख़ामोश है। युद्ध के दोनों पक्षों पर एक महान शान्ति छायी थी। उस क्रिसमस की सुबह क्या होने वाला था?

अचानक अंग्रेजी सिपाहियों ने भूरे रंग के वर्दी पहने तीन सिपाही जर्मनी के ख़ंदकों में से बाहर निकल आते दिखें। उनके हाथों में इस दफा ना ही संगीन थी ना ही हथगोले थे। वे धीरे-धीरे, मगर सावधानी से अपने तरफ की तार का घेरा पार करके संकोच से आगे बढ़ रहे थे। वे कुछ भी सुरक्षा के बगैर तटस्थ क्षत्र पर खड़े थे। जब तक कि वे समझ पायें की क्या हो रहा है, जर्मनी के गड्ढों में से और अँग्रेजों की गड्ढों में से अनगिनत सिपाही बाहर निकल कर बीच तटस्थीय जगह की ओर भाग रहें थे।

फ्लॉन्डर्स का कीचड, खाकी वर्दी पहने अंग्रेज को और भूरा रंग का वर्दी पहने जर्मन सिपाहियों के बीच कोई अन्तर नही छोड़ा। सब कीचड़ से ढके थे। सिपाही जो कल तक एक दूसरे की जान लेने के लिए तैयार थे अब हाथ मिलाये टूटी-फूटी भाषा में क्रिसमस की शुभ कामनाएँ दे रहें थे।

दोनों तरफ से अपनी अपनी भाषा में क्रिसमस के लोक प्रिय गानों की जुगल-बंदी, देर तक चली।

वह क्रिसमस की सुबह और दोपहर, भाई चारे और दोस्ती से भरे बीती। आपस में गाने और तोफ्हों का लेन देन हुआ। और धीरे-धीरे क्रिसमस का दिन ढला और दोनों तरफ के सिपाही अपने अपने गड्ढों में वापस चले गये। और फिर वे दुबारा अपने हाथों में हथियार उठाये।

लम्बे समय तक चले उस महा युध्द में वह शान्ति, एक मात्र घटना थी। मगर वह एक घटना है जिसने मनुष्य के हृदय में आशा जगाई। यह एक घटना है जो हमें यह विश्वास करने पर मजबूर करता है कि आज भले ही हमारी पृथ्वी पर युद्ध और घृणा छायी हुई है मगर नफरत से भी ताकतवर प्रेम है। और अन्धकार से भी शक्तिशाली उजाला है। मसीह के पैदा होने से इस दुनिया में सामर्थ आयी जो एक दिन अन्धकार की शक्तियाँ पर विजय पायेगा। और अनन्तकालीन रोशनी और अनन्तकालीन शान्ति इस दुनिया में लायेगा।

चमत्कारों में चमत्कार और रातों में अद्भुत रात सिर्फ आप के लिए ही थी! जब तक ना वह रातों की रात आई, अगर आप ही एक मात्र होते जिन्हे एक उद्धारक की बड़ी जरूरत थी, तब भी मसीह इस दुनिया में ज़रूर जन्म लेते। फिर भी वे आप के लिए कल्वरी के क्रूस पर अपना प्राण देते। क्या आप उनको अपना राजा और उद्धार कर्ता स्वीकार करते हो? जितनों ने भी उनको स्वीकार किया है, उन्हें परमेश्वर के सन्तान कहलाने का अधिकार दिया है।

दुख के ऊपर विजय, घृणा और प्रलोभन पर सामर्थ, समय पर काबू, पाप और मृत्यु पर विजय! इन विषयों के बारे में सोचो!

सि.ई.एन मेक़र्टनी

परमेश्वर का अनन्तकालीन प्रेम

एक अविश्वासी घुड़सवार, अपनी नासमझी और पागलपन में स्वर्ग को ही चुनौती देने लगा। वह नहीं मानता था कि परमेश्वर है। उसी परमेश्वर की असलियत और सामर्थ परखने को तय करके निकल पड़ा। जिस तरीके का वह आदी था उसी रीति पर वह परमेश्वर को आज़माने को तैयार हुआ। सशस्त्र, मानो लड़ाई के लिए तैयार वह युद्ध भूमि में आया हो। प्राचीन योद्धाओं की तरह दस्ताना नीचे फेंककर स्वर्ग को चुनौती देने लगा - "परमेश्वर! अगर सच में परमेश्वर है, तो इधर मैं आपको चुनौती देता हूँ। आकर एक मानव से लड़! अगर तू सच में हो, तो तेरे पाखंडी सेवक जो तेरी शक्ति के बारे में इतनी बड़ी बड़ी बाते करते है, मुझ पर प्रकट कर!" ऐसे ललकारते समय उसकी नज़र हवा में उड़ते एक चर्मपत्र पर पड़ी। वह ठीक उसके सामने आ गिरा। उसने नीचे झुककर उसे उठाया। "परमेश्वर प्रेम है!" - उस चर्मपत्र पर यह लिखा पाया। अकल्पनीय इस उत्तर से हतप्रभ, उसने अपने जीवन को उस परमेश्वर को उसी समय समर्पित किया जिसे कुछ समय पहले तक वह ललकार रहा था। अपनी तलवार के दो टुकड़े करके घुटने टेककर, अब से परमेश्वर की सेवा करने का निर्णय ले आत्मसमर्पण कर दिया।

इस तरह, परमेश्वर के प्रति मनुष्य का खुला अनादर, उनके विरुद्ध इस संसार की बगावत, देशों में प्रबल नास्तिकता और व्यक्तिगत रूप से उनकी निन्दा - इन सब का स्वर्ग से प्रत्युत्तर सिर्फ यही रहा, "परमेश्वर प्रेम है!" स्वर्ग दूतों के मधुर गान में, उस रात की निःशब्द हवा में बिखेरता सन्देश यहीं है। मसीह के आने का यही अर्थ है। रुखाई से भरी दुनिया; परमेश्वर के लिए बन्द मनुष्यों के हृदय; विद्रोह से भरा, जातियों के विचार; इस रुखाई, अनादर, विद्रोह का प्रत्युत्तर, तेजी से आया न्यायदण्ड़ नहीं, मगर एक तोहफ़ा था जो परमेश्वर का पुत्र, हमारा उद्धाकर्ता है! परमेश्वर हम से नफरत नहीं करते, बल्कि कोमल और अनन्तकालीन प्रेम से वे हम से प्यार करते है।

एन्डरू मरे ने कहा,

एक विनम्र व्यक्ति में ईर्ष्या या डाह नहीं होती। जब दूसरों को एहमियत जाए, तो वह परमेश्वर की स्तुति करता है। जब उसे भूल कर दूसरों की प्रशंसा किया जाए तो वह सुन सकता है। क्योंकि उन्होंने यीशु का आत्मा पाया है जो अपने आप को प्रसन्न करने या अपने आदर की तलाश में कभी न था। इस तरह प्रभु यीशु मसीह को धारण करके, वे करुणा, दया, नम्रता, सहन शीलता और दीनता अपने हृदय में पायी है।